http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 3, 10-14

Article ID:571

कृषि निर्यात के अवसर: भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना

पंकज कुमार[1*], अनिल कुमार[2]

[1]फार्म मैनेजर, कृषि विभाग, लाला राम गोपाल वैदिक शोध संस्थान (अमर सिंह कॉलेज, लखावटी, बुलंदशहर) उत्तर प्रदेश– 203001

[2]सहायक प्रोफेसर, सस्यविज्ञान विज्ञान, कृषि संकाय, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह-470661

*अनुरूपी लेखक

पंकज कुमार*

भारत विश्व के सबसे बड़े कृषि उत्पादकों में से एक है, जिसे विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों और विशाल किसान समुदाय का समर्थन प्राप्त है। यह क्षेत्र देश की लगभग आधी कार्यबल को रोजगार प्रदान करता है और ग्रामीण आजीविका तथा खाद्य सुरक्षा का मुख्य आधार है।मजबूत उत्पादन क्षमता के बावजूद, वैश्विक कृषि निर्यात में भारत की हिस्सेदारी अभी भी अपेक्षाकृत कम है, जो अपार संभावनाओं की ओर संकेत करती है। कृषि निर्यात आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह विदेशी मुद्रा अर्जित करता है, किसानों की आय बढ़ाता है और प्रसंस्करण, पैकेजिंग तथा लॉजिस्टिक्स जैसी मूल्य श्रृंखलाओं में रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है।वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव और सुरक्षित एवं उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय मांग में वृद्धि के साथ, भारत के पास गुणवत्ता मानकों में सुधार, बुनियादी ढांचे के विकास और प्रभावी नीतिगत समर्थन के माध्यम से वैश्विक बाजारों में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के महत्वपूर्ण अवसर हैं।

2. भारत में कृषि निर्यात का महत्व

2.1 आर्थिक विकास

कृषि निर्यात भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में योगदान देता है और व्यापार संतुलन में सुधार करता है। निर्यात में वृद्धि से मूल्यवान विदेशी मुद्रा अर्जित होती है, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को स्थिर रखने और व्यापार घाटे को कम करने में सहायक होती है।

2.2 किसानों की आय में वृद्धि

निर्यात-उन्मुख कृषि किसानों को वैश्विक बाजारों तक पहुंच प्रदान करती है, जहां कीमतें अक्सर घरेलू बाजार की तुलना में अधिक लाभकारी होती हैं। इससे कृषि लाभप्रदता बढ़ती है और ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर में सुधार होता है। अधिक आय किसानों को उन्नत तकनीकों और बेहतर कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए भी प्रोत्साहित करती है।

2.3 रोजगार सृजन

कृषि निर्यात केवल खेती तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विभिन्न सहायक क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है। खाद्य प्रसंस्करण, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, भंडारण, परिवहन और निर्यात लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में रोजगार बढ़ता है, जो ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के आर्थिक विकास में योगदान देता है।

2.4 कृषि का विविधीकरण

कृषि निर्यात किसानों को उच्च मूल्य वाली फसलों जैसे फल, सब्जियाँ, मसाले, औषधीय पौधे और जैविक उत्पादों की खेती के लिए प्रोत्साहित करता है। यह बदलाव आय बढ़ाने के साथ-साथ पारंपरिक फसलों पर निर्भरता कम करता है और बाजार तथा जलवायु जोखिमों के प्रति लचीलापन बढ़ाता है।

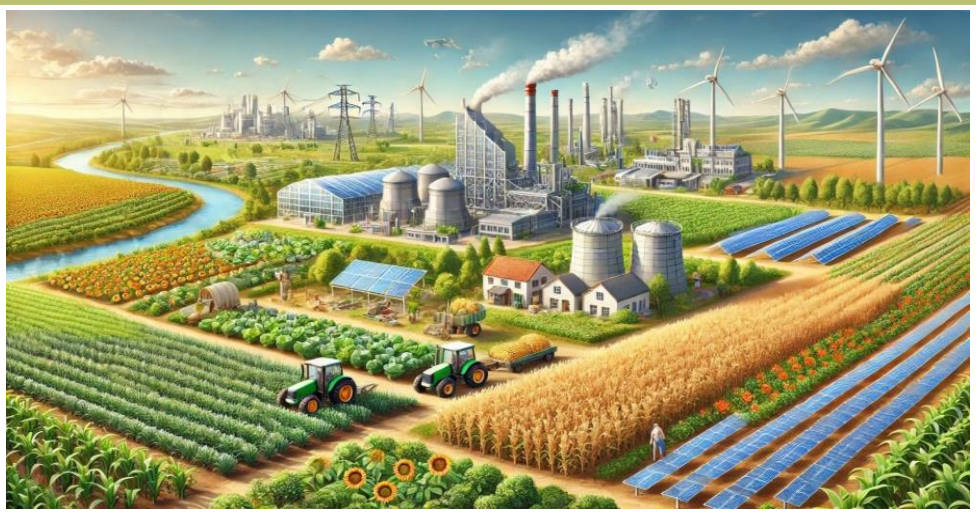

Source: https://sageuniversity.edu.in/

3. भारत का कृषि निर्यात परिदृश्य

भारत वैश्विक कृषि व्यापार में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और अपनी विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों के कारण अनेक प्रकार के कृषि उत्पादों का निर्यात करता है। देश से निर्यात किए जाने वाले प्रमुख कृषि उत्पादों में शामिल हैं:

- **अनाज (Cereals):** चावल (विशेष रूप से बासमती और गैर-बासमती)
- **मसाले (Spices):** काली मिर्च, इलायची, हल्दी, जीरा
- **फल एवं सब्जियाँ (Fruits and Vegetables):** आम, अंगूर, प्याज
- **समुद्री उत्पाद (Marine Products):** झींगा और मछली
- **बागान फसलें (Plantation Crops):** चाय, कॉफी, रबर

भारत विश्व में चावल और मसालों के प्रमुख निर्यातकों में से एक है, जो इसकी मजबूत उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता को दर्शाता है। इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर जैविक (ऑर्गेनिक) और प्रसंस्कृत (प्रोसेस्ड) खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग ने भारतीय कृषि उत्पादों के लिए नए निर्यात अवसर उत्पन्न किए हैं।

4. कृषि निर्यात में अवसर

4.1 बढ़ती वैश्विक खाद्य मांग

वैश्विक जनसंख्या में निरंतर वृद्धि के कारण खाद्य पदार्थों की मांग तेजी से बढ़ रही है। यह भारत के लिए एक बड़ा अवसर प्रदान करता है, क्योंकि इसकी उत्पादन क्षमता और फसलों की विविधता निर्यात विस्तार के लिए अनुकूल है।

4.2 जैविक और सतत उत्पाद

वैश्विक स्तर पर जैविक और सतत रूप से उत्पादित खाद्य पदार्थों की मांग बढ़ रही है। पारंपरिक कृषि पद्धतियों और जैविक खेती के बढ़ते अपनाने के कारण भारत प्रीमियम अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रवेश करने की मजबूत क्षमता रखता है।

4.3 मूल्य वर्धित उत्पाद

कच्चे कृषि उत्पादों को फलों के रस, रेडी-टू-ईट भोजन, जमे हुए खाद्य पदार्थ और पैकेज्ड उत्पादों में परिवर्तित करने से उनका बाजार मूल्य बढ़ता है। इससे न केवल निर्यात आय बढ़ती है, बल्कि कटाई के बाद होने वाले नुकसान में भी कमी आती है।

4.4 तकनीकी उन्नति

आधुनिक तकनीकों जैसे प्रिसीजन फार्मिंग, उन्नत सिंचाई प्रणाली, कोल्ड स्टोरेज और कुशल आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के उपयोग से उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखने और शेल्फ लाइफ बढ़ाने में मदद मिलती है, जो अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करने के लिए आवश्यक है।

4.5 सरकारी समर्थन

विभिन्न सरकारी नीतियाँ और निर्यात प्रोत्साहन योजनाएँ वित्तीय सहायता, बुनियादी ढांचा समर्थन और बाजार तक पहुंच प्रदान करती हैं, जिससे कृषि निर्यात के विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनता है।

4.6 उभरते बाजार

एशिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व के उभरते बाजारों के साथ व्यापार संबंधों का विस्तार भारतीय कृषि उत्पादों के लिए नए और अप्रयुक्त अवसर प्रदान करता है, जिससे निर्यात गंतव्यों में विविधता आती है और बाजार जोखिम कम होता है।

5. कृषि निर्यात में चुनौतियाँ

5.1 गुणवत्ता मानक

कृषि निर्यात में प्रमुख चुनौतियों में से एक कड़े अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा मानकों को पूरा करना है। कई भारतीय निर्यातकों को कीटनाशक अवशेष, स्वच्छता, ग्रेडिंग और प्रमाणन से संबंधित नियमों का पालन करने में कठिनाई होती है, जिससे अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक उनकी पहुंच सीमित हो जाती है।

5.2 अवसंरचना की कमी

अपर्याप्त बुनियादी ढांचा निर्यात वृद्धि में एक बड़ी बाधा है। उचित भंडारण सुविधाओं, कोल्ड चेन और आधुनिक परिवहन प्रणालियों की कमी के कारण विशेष रूप से फल और सब्जियों जैसी नाशवान वस्तुओं में अधिक पोस्ट-हार्वेस्ट नुकसान होता है।

5.3 मूल्य अस्थिरता

कृषि निर्यात वैश्विक मूल्य उतार-चढ़ाव से अत्यधिक प्रभावित होता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार की कीमतों, विनिमय दरों और मांग-आपूर्ति की स्थितियों में बदलाव से निर्यातकों और किसानों की प्रतिस्पर्धात्मकता और लाभप्रदता कम हो सकती है।

5.4 आपूर्ति श्रृंखला की अक्षमताएँ

भारत की कृषि आपूर्ति श्रृंखलाएँ अक्सर बिखरी हुई और कम कुशल होती हैं, जिनमें कई बिचौलिये शामिल होते हैं। इससे लागत बढ़ती है, देरी होती है और पारदर्शिता कम होती है, जो अंततः निर्यात प्रदर्शन और उत्पाद गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

5.5 नीतिगत अनिश्चितता

निर्यात नीतियों में बार-बार बदलाव, जैसे अचानक प्रतिबंध, निर्यात रोक या शुल्क परिवर्तन, निर्यातकों के लिए अनिश्चितता पैदा करते हैं। इससे दीर्घकालिक निवेश हतोत्साहित होता है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारत की विश्वसनीयता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

6. कृषि निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सरकारी पहल

6.1 कृषि निर्यात नीति (2018)

कृषि निर्यात नीति (2018) का उद्देश्य भारत के कृषि निर्यात को दोगुना करना और किसानों की आय बढ़ाना है, उन्हें वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं से जोड़कर। यह नीति निर्यात अवसंरचना के विकास, मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने और निर्यात बाजारों के विविधीकरण पर केंद्रित है।

6.2 एपीडा (APEDA – Agricultural and Processed Food Products Export Development Authority)

एपीडा कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह गुणवत्ता प्रमाणन, क्षमता निर्माण और बाजार विकास में सहायता प्रदान करता है, जिससे निर्यातक अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा कर सकें और वैश्विक बाजारों तक पहुंच बना सकें।

6.3 मेगा फूड पार्क योजना

यह योजना आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण अवसंरचना के विकास को प्रोत्साहित करती है। मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देकर और अपव्यय को कम करके यह कृषि उत्पादों की निर्यात क्षमता बढ़ाती है तथा किसानों की आय में सुधार करती है।

6.4 ऑपरेशन ग्रीन्स (Operation Greens)

ऑपरेशन ग्रीन्स का उद्देश्य फल और सब्जियों जैसे नाशवान उत्पादों की आपूर्ति और कीमतों को स्थिर करना है। यह कोल्ड चेन अवसंरचना को मजबूत करने और कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने पर केंद्रित है, जिससे निर्यात वृद्धि को समर्थन मिलता है।

6.5 डिजिटल प्लेटफॉर्म

e-NAM (राष्ट्रीय कृषि बाजार) जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म किसानों को देशभर के खरीदारों से सीधे जोड़ते हैं। ये प्लेटफॉर्म मूल्य खोज, पारदर्शिता और बाजार तक पहुंच को बेहतर बनाते हैं, जिससे भारतीय कृषि उत्पादों की निर्यात क्षमता और प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि होती है।

7. कृषि निर्यात को बढ़ाने की रणनीतियाँ

7.1 गुणवत्ता मानकों में सुधार

वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धा के लिए उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है। किसानों और निर्यातकों को गुड एग्रीकल्चरल प्रैक्टिसेज (GAP) अपनानी चाहिए तथा ऑर्गेनिक और ISO जैसे प्रमाणनों को प्राप्त करना चाहिए, ताकि अंतरराष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता मानकों को पूरा किया जा सके।

7.2 अवसंरचना को सुदृढ़ करना

मजबूत बुनियादी ढांचे का विकास, जैसे कोल्ड स्टोरेज, आधुनिक गोदाम और कुशल परिवहन प्रणाली, पोस्ट-हार्वेस्ट नुकसान को कम करने और परिवहन के दौरान उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। बेहतर लॉजिस्टिक्स से निर्यात दक्षता में वृद्धि होती है।

7.3 मूल्य संवर्धन को बढ़ावा (Promoting Value Addition)

एग्रो-प्रोसेसिंग उद्योगों को प्रोत्साहित करने से कच्चे कृषि उत्पादों को प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों, पेय पदार्थों और पैकेज्ड उत्पादों में बदला जा सकता है। इससे निर्यात आय बढ़ती है और उत्पाद की शेल्फ लाइफ तथा बाजार आकर्षण में सुधार होता है।

7.4 बाजार विविधीकरण

नए और उभरते अंतरराष्ट्रीय बाजारों में विस्तार करने से कुछ सीमित देशों पर निर्भरता कम होती है। इससे बाजार में उतार-चढ़ाव और व्यापारिक प्रतिबंधों से जुड़े जोखिम कम होते हैं।

7.5 क्षमता निर्माण

किसानों और निर्यातकों के लिए आधुनिक कृषि तकनीकों, पोस्ट-हार्वेस्ट प्रबंधन और निर्यात प्रक्रियाओं पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आवश्यक हैं। इससे उत्पादकता, गुणवत्ता और वैश्विक मानकों के अनुरूपता में सुधार होता है।

7.6 तकनीक का उपयोग

डिजिटल प्लेटफॉर्म, रिमोट सेंसिंग और ब्लॉकचेन जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग ट्रेसबिलिटी, पारदर्शिता और गुणवत्ता आश्वासन सुनिश्चित करता है, जिससे भारतीय कृषि निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है।

8. निर्यात वृद्धि में एग्रोनॉमी और तकनीक की भूमिका

आधुनिक एग्रोनॉमिक प्रथाएँ और उन्नत तकनीकें उत्पादकता और गुणवत्ता दोनों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो निर्यात प्रतिस्पर्धा के लिए आवश्यक हैं। प्रिसीजन फार्मिंग तकनीकों से जल, उर्वरक और कीटनाशकों जैसे संसाधनों का कुशल उपयोग संभव होता है, जिससे उत्पादन बढ़ता है और लागत कम होती है। मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैसे संतुलित पोषक तत्वों का उपयोग और जैविक संशोधन, फसल की गुणवत्ता और स्थिरता को बढ़ाते हैं।

ड्रोन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसी तकनीकों के एकीकरण से वास्तविक समय में फसल निगरानी, रोग पहचान और समय पर निर्णय लेने में सहायता मिलती है। जलवायु-स्मार्ट कृषि पद्धतियाँ, जैसे सूखा-रोधी किस्में और कुशल सिंचाई प्रणाली, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति लचीलापन सुनिश्चित करती हैं। ये सभी नवाचार निर्यात-योग्य गुणवत्ता बनाए रखने, पोस्ट-हार्वेस्ट नुकसान को कम करने और वैश्विक बाजारों में ट्रेसबिलिटी सुधारने में सहायक हैं।

9. भविष्य की संभावनाएँ

भारत में कृषि निर्यात के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व प्राप्त करने की अपार संभावनाएँ हैं, विशेषकर सतत और जलवायु-लचीली कृषि प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करके। एग्रोनॉमिक नवाचारों को बढ़ावा देना और आधुनिक तकनीकों को अपनाना विकास के प्रमुख कारक होंगे।किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को सशक्त बनाकर सामूहिक सौदेबाजी क्षमता बढ़ाई जा सकती है, जिससे बेहतर बाजार पहुंच और किसानों को उचित मूल्य मिल सके। इसके अतिरिक्त, अवसंरचना, अनुसंधान और सहायक सरकारी नीतियों में बढ़ा हुआ निवेश निर्यात दक्षता को और मजबूत करेगा। उचित रणनीति अपनाकर भारत वैश्विक कृषि बाजार में अपनी स्थिति को और सुदृढ़ कर सकता है और दीर्घकालिक आर्थिक विकास सुनिश्चित कर सकता है।

10. निष्कर्ष

कृषि निर्यात भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत

करता है। अपनी विविध उत्पादन क्षमता का प्रभावी उपयोग, गुणवत्ता मानकों में सुधार और आधुनिक तकनीकों को अपनाकर भारत वैश्विक बाजार में अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ा सकता है।नीतिगत सुधार, अवसंरचना विकास और क्षमता निर्माण के माध्यम से वर्तमान चुनौतियों का समाधान कर सतत विकास सुनिश्चित किया जा सकता है। अंततः, कृषि निर्यात को बढ़ावा देने से किसानों की आय में वृद्धि, ग्रामीण विकास और समग्र आर्थिक समृद्धि को प्रोत्साहन मिलेगा।